[illegible] ने अपनी रचना **'समाजवाद क्या है?'** में समाजवाद की लगभग 263 परिभाषाएं संग्रहित की थीं, पी. [illegible] ने अपनी एक पुस्तक में समाजवाद की 400 से भी अधिक परिभाषाओं का संकलन किया है और 1892 में पेरिस के एक पत्र **'ली फिगारो'** (Le Figaro) ने विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न समयों पर दी गई समाजवाद की लगभग 600 परिभाषाएं दी थीं। ऐसी स्थिति में यह सुगमतापूर्वक कहा जा सकता है कि समाजवाद की उतनी ही परिभाषाएं हैं जितने कि समाजवादी। कुछ प्रमुख विचारकों द्वारा समाजवाद की परिभाषाएं इस प्रकार दी गयी हैं :

वेल्जियन समाजवादी इमाइल के शब्दों में **''समाजवाद का अर्थ है श्रमिकों की एक ऐसी व्यवस्था, जो पूंजीवादी सम्पत्ति को सामाजिक सम्पत्ति में बदलने के उद्देश्य से राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करेगी।''**[1]

कोकर के मतानुसार, **''समाजवाद का अभिप्राय सम्पत्ति के सभी आधारभूत साधनों पर नियन्त्रण से है। यह नियन्त्रण समाजवाद के किसी एक वर्ग द्वारा न होकर स्वयं समाज के द्वारा होगा और धीरे-धीरे व्यवस्थित ढंग से स्थापित किया जाएगा।''**

हूगन (Hughan) के अनुसार, **''समाजवाद श्रमिक वर्ग द्वारा की जाने वाली एक ऐसी राजनीतिक क्रान्ति है जिसका उद्देश्य उत्पादन तथा वितरण के साधनों की प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था तथा सामूहिक स्वामित्व द्वारा शोषण का उन्मूलन करना है।''**[2]

सेलर्स (Sellers) के अनुसार, **''समाजवाद एक ऐसी प्रजातन्त्रात्मक विचारधारा है जिसका उद्देश्य समाज में एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था लाना है जो किसी भी समय व्यक्ति को अधिकतम सम्भव न्याय और स्वाधीनता प्रदान कर सके।''**[3]

रैम्जे मैक्डानल्ड के अनुसार, **''साधारण रूप से समाजवाद की इससे अधिक अच्छी परिभाषा नहीं दी जा सकती कि वह समाज की भौतिक तथा आर्थिक शक्तियों की एक ऐसी व्यवस्था चाहता है, जिस पर मानवीय शक्ति का नियन्त्रण हो।''**[4]

उपरोक्त विद्वानों की तुलना में भारत के समाजवादी नेता **जयप्रकाश नारायण** की परिभाषा अधिक स्पष्ट है। उनके शब्दों में, **''समाजवादी समाज एक ऐसा वर्गहीन समाज होगा, जिसमें सब श्रमजीवी होंगे। इस समाज में वैयक्तिक सम्पत्ति के हित के लिए मनुष्य के श्रम का शोषण नहीं होगा। इस समाज की सारी सम्पत्ति सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय अथवा सार्वजनिक सम्पत्ति होगी तथा अनार्जित आय और आय सम्बन्धी भीषण असमानताएं सदैव के लिए समाप्त हो जाएंगी। ऐसे समाज में मानव जीवन तथा उसकी प्रगति योजनाबद्ध होगी और सब लोग सबके हित के लिए जीएंगे।''**

उपरोक्त परिभाषाओं के शब्दों में पर्याप्त भेद है। इनमें से किसी परिभाषा में समाजवाद को एक आन्दोलन, किसी में एक आर्थिक प्रणाली तथा किसी में दर्शन माना गया है। इन परिभाषाओं में इतनी विभिन्नता होते हुए भी यह स्पष्ट है कि समाजवाद पूंजीवाद का घोर विरोधी है और यह पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर उत्पादन के साधनों (भूमि, उद्योग, इत्यादि) पर समाज का नियन्त्रण स्थापित करना चाहता है जिससे आर्थिक असमानता का अन्त होकर सभी व्यक्तियों को उन्नति के समान अवसर प्राप्त हो सकें।

समाजवाद का इतिहास